विद्या - भवन बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

वर्ग - द्वितीय विषय - हिंदी

एन.सी.ई.आर.टी पर आधारित

दिनांक - 06 - 09- 2021

कृष्ण सुदामा

सुप्रभात बच्चों ,

आज की कक्षा में आपको कृष्ण सुदामा कहानी के बारे में अध्ययन करना है, जो इस प्रकार है।

शब्दार्थ :-

प्रेम - स्नेह , उपहार

उपहार - भेंट , तोहफा

संकोच - लज्जा , शर्मा आना

द्वारपाल – पहरेदार

डावांडोल - कभी इधर , कभी उधर

चमत्कार - अद्भुत बात

चकित – हैरान

सिंहासन - राजा की गद्दी

विदा - चले जाना

जान छिड़कने थे - बहुत प्यार करते थे

लिखें तथा याद करें-

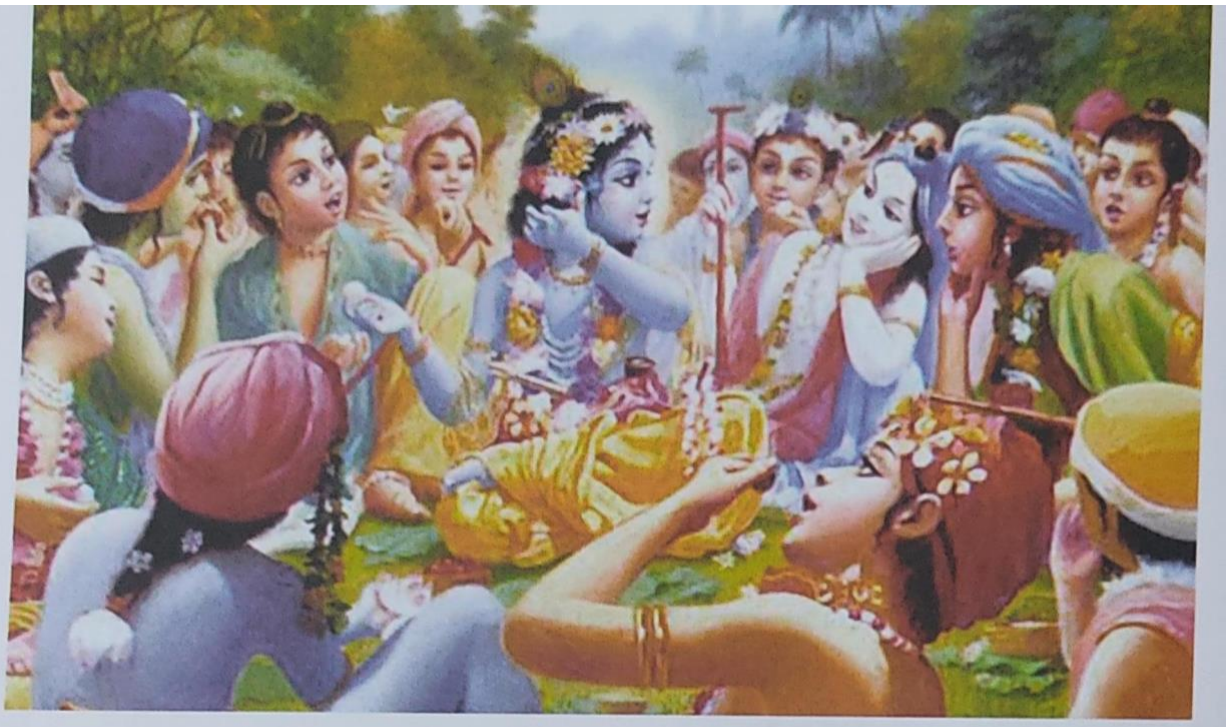

बहुत समय पहले की बात है। कृष्ण और सुदामा एक ही गुरु के आश्रम में पढ़ते थे। दोनों पक्के मित्र थे और एक–दूसरे पर जान छिड़कते थे।

समय बीता। कृष्ण बने द्वारिका के राजा। पर सुदामा का जीवन तो गरीबी से भरा था।

एक दिन सुदामा की पत्नी ने उनसे कहा–आप बहुत बार कह चुके हैं कि द्वारिका के राजा श्रीकृष्ण आपके मित्र हैं। आप उनके पास क्यों नहीं जाते? वे जरूर आपकी मदद करेंगे।

सुदामा मान गए। फिर बोले–घर में तो कुछ है नहीं। मित्र के लिए उपहार क्या ले जाऊँ? तब सुदामा की पत्नी पड़ोस से थोड़े चावल ले आईं और उसकी पोटली बनाकर सुदामा को दे दी। सुदामा घर से चल पड़े। उनका मन डावाँडोल हो रहा था। वे सोच रहे थे–कृष्ण अब इतने बड़े राजा हो गए हैं। अगर उन्होंने न पहचाना तो?

चलते–चलते वे द्वारिका जा पहुँचे। कृष्ण के महल के द्वार पर जा खड़े हुए। द्वारपाल ने पूछा–आपको किससे मिलना है?

सुदामा बोले–मेरा नाम सुदामा है। मैं अपने मित्र कृष्ण से मिलने आया हूँ।

जैसे ही भीतर जाकर द्वारपाल ने सुदामा का नाम लिया, कृष्ण दौड़े–दौड़े बाहर आए।

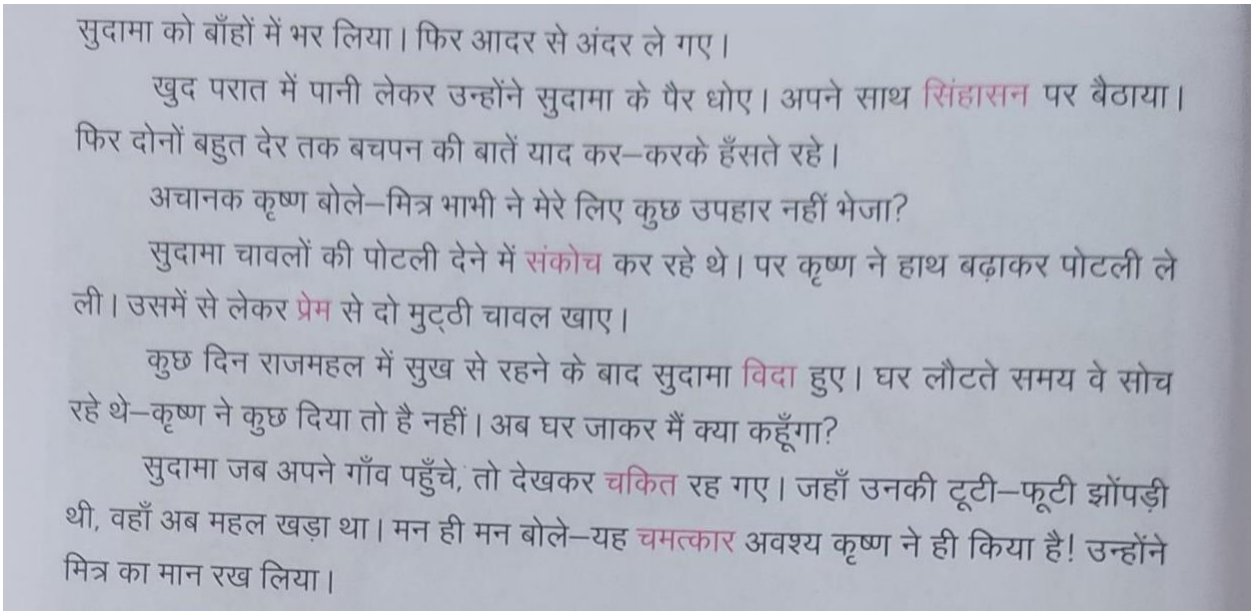

सुदामा को बाँहों में भर लिया। फिर आदर से अंदर ले गए।

खुद परात में पानी लेकर उन्होंने सुदामा के पैर धोए। अपने साथ सिंहासन पर बैठाया। फिर दोनों बहुत देर तक बचपन की बातें याद कर–करके हँसते रहे।

अचानक कृष्ण बोले–मित्र भाभी ने मेरे लिए कुछ उपहार नहीं भेजा?

सुदामा चावलों की पोटली देने में संकोच कर रहे थे। पर कृष्ण ने हाथ बढ़ाकर पोटली ले ली। उसमें से लेकर प्रेम से दो मुट्ठी चावल खाए।

कुछ दिन राजमहल में सुख से रहने के बाद सुदामा विदा हुए। घर लौटते समय वे सोच रहे थे–कृष्ण ने कुछ दिया तो है नहीं। अब घर जाकर मैं क्या कहूँगा?

सुदामा जब अपने गाँव पहुँचे, तो देखकर चकित रह गए। जहाँ उनकी टूटी–फूटी झोंपड़ी थी, वहाँ अब महल खड़ा था। मन ही मन बोले–यह चमत्कार अवश्य कृष्ण ने ही किया है! उन्होंने मित्र का मान रख लिया।

गृहकार्य

दिए, गए अध्ययन सामग्री को पूरे मनोयोग से पढ़ें तथा समझने का प्रयास करेंगे-

****

ज्योति